हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नाम पर जालसाजी

दिसंबर 1986 — आदर्श पत्र (बंगलूर)

(शशिधर खां द्वारा)

बंगलूर १९ दिसंबर। तथाकथित हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का वार्षिक अधिवेशन इस माह की २७-२८ तारीख को बंगलूर में होने जा रहा है। सम्मेलन के स्वयंभू प्रधान मंत्री श्रीधर शास्त्री ने बंगलूर के जाने–माने वयोवृद्ध विद्वान श्री लोकनाथन को अपने जाल में फंसाकर उन्हें सम्मेलन का स्वागत मंत्री बना दिया है।

असली हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री डॉ प्रभात शास्त्री ने श्रीधर शास्त्री की साहित्य के नाम पर की जा रही जालसाजी का पर्दाफाश किया है और उन्होंने इस संबंध में लोकनाथन जी के नाम विरोध पत्र भेजा है।

वास्तविक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना प्रयाग में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने की थी, जिसका श्रीधर पाठक के प्रधानमंत्रित्व वाले सम्मेलन से दूर –दूर तक कोई संबंध नहीं है। असली साहित्य सम्मेलन का कार्यालय इलाहाबाद में १२ नं. सम्मेलन मार्ग पर स्थित है, जबकि श्रीधर शस्त्री ने अपना फर्जी कार्यालय इलाहाबाद में ही १४४ नं. विवेकानंद मार्ग पर होने का दावा किया है।

डा. प्रभात शास्त्री के श्री लोकनाथन के नाम लिखे गए पत्र के अनुसार श्रीधर शास्त्री की हिंदी साहित्य सम्मेलन संबंधी सारी बातें झूठ, फरेब और मनगढ़ंत तथ्यों पर आधारित हैं। श्रीधर शास्त्री सम्मेलन की पंजीयन संख्या गलत बताते हैं। सच तो यह है कि श्रीधर शास्त्री इलाहाबाद जिला न्यायालय द्वारा धारा ४२०, ४०९, ४६८, ४७१, ४९२, ४९४ एवं ५१ मु.स. ९६२४/८२ के अन्तर्गत जेल की सजा भुगत चुके हैं। जमानत पर छूटने के बाद उन्होंने साहित्य को निजी फायदे के लिए भुनाना शुरू कर दिया। न तो इलाहाबाद में कहीं इसका कार्यालय है, न ही उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा यह पंजीकृत ही है।

श्री प्रभात शास्त्री का कहना है कि श्रीधर शास्त्री का एकमात्र उद्देश्य अहिंदीभाषी प्रदेशों के साहित्य प्रेमियों को गुमराह करना है। स्वयं को इस फर्जी सम्मेलन का प्रधानमंत्री घोषित करके उन्होंने सरकार से और विभिन्न सामाजिक –सांस्कृतिक संस्थाओं से चंदे के रुप में बड़ी मात्रा में धनराशि वसूल की है तथा ताम्रपत्र के बजाय महज आर्ट पेपर पर 'साहित्यवाचस्पति' की जाली उपाधि देकर एक ओर जहां हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की छवि धूमिल करने की कोशिश कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर साहित्य मनीषियों को भी बेवकूफ बना रहे हैं।